अयोध्या का बौद्ध धर्म से नाता क्या है?

इतिहासकारों के अनुसार 1528 में बाबर के सेनापति मीर बकी ने अयोध्या में राम मंदिर तोड़कर बाबरी मस्जिद बनवाई थी। बाबर एक तुर्क था। कहते हैं कि उसने बर्बर तरीके से हिन्दुओं का कत्लेआम कर अपनी सत्ता कायम की थी। माना जाता है कि मंदिर तोड़ते वक्त 10,000 से ज्यादा हिन्दू उसकी रक्षा में शहीद हो गए थे। वर्तमान में अयोध्या पर विवाद जारी है। इस बीच बौद्धों ने भी अयोध्या पर अपना दावा ठोक दिया है। धार्मिक महत्ता की दृष्टि से अयोध्या हिन्दुओं और जैनियों का एक पवित्र तीर्थस्थल है। इसी संदर्भ में एक आलेख...

भगवान राम की पवित्र नगरी अयोध्या हिन्दुओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहां पर भगवान राम का जन्म हुआ था। यह राम जन्मभूमि है। राम एक ऐतिहासिक महापुरुष थे और इसके पर्याप्त प्रमाण हैं। आधुनिक शोधानुसार भगवान राम का जन्म 5114 ईस्वी पूर्व हुआ था।

इतिहासकारों के अनुसार 1528 में बाबर के सेनापति मीर बकी ने अयोध्या में राम मंदिर तोड़कर बाबरी मस्जिद बनवाई थी। बाबर एक तुर्क था। कहते हैं कि उसने बर्बर तरीके से हिन्दुओं का कत्लेआम कर अपनी सत्ता कायम की थी। माना जाता है कि मंदिर तोड़ते वक्त 10,000 से ज्यादा हिन्दू उसकी रक्षा में शहीद हो गए थे। वर्तमान में अयोध्या पर विवाद जारी है। इस बीच बौद्धों ने भी अयोध्या पर अपना दावा ठोक दिया है। धार्मिक महत्ता की दृष्टि से अयोध्या हिन्दुओं और जैनियों का एक पवित्र तीर्थस्थल है। इसी संदर्भ में एक आलेख...

सिर्फ जन्मभूमि पर दावा

पवित्र नगरी अयोध्या भारत के प्राचीन नगरों में से एक है। यरूशलम की तरह यह भी तीन धर्मों हिंदू, जैन और बौद्ध का प्रमुख केंद्र है। तीनों ही धर्मों के लिए यह नगर पवित्र और तीर्थ नगर है। हिन्दू संपूर्ण अयोध्या पर अपना दावा नहीं करते वे सिर्फ राम जन्मभूमि पर अपना दावा करते हैं। राम जन्मभूमि के अलावा अन्य जगहों पर जैन और बौद्ध धर्म के पवित्र स्थल है।

अयोध्या में कई महान योद्धा, ऋषि-मुनि और अवतारी पुरुष हो चुके हैं। यहीं पर भगवान श्रीराम का जन्म हुआ और यहीं पर जैन धर्म के तीर्थंकर ऋषभदेव, अजीतनाथ, अभिनंदन, सुमतिनाथ और अनंतनाथजी का जन्म भी हुआ। पार्श्वनाथ और सुपार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी में हुआ, जो कि जैन और हिन्दू दोनों ही धर्मों का बड़ा तीर्थ स्थल है। अयोध्या रघुवंशी राजाओं की बहुत पुरानी राजधानी थी।

अयोध्या पर नव बौद्धों का दावा राजनीति से प्रेरित- सामाजिक न्याय और आधिकारिता मंत्री रामदास आठवले ने उज्जैन यात्रा के दौरान एक बयान में कहा था कि अयोध्या में जिस जमीन को लेकर झगड़ा हो रहा है असल में वह बौद्धों की है, जहां बौद्ध धर्म से जुड़े कला और शिल्प मिले हैं। हालांकि आठवले को पूर्ण जानकारी नहीं है। दरअसल, 1981-1982 ईस्वीं में अयोध्या के सीमित क्षेत्र में एक उत्खनन किया गया था। यह उत्खनन मुख्यत-हनुमानगढ़ी और लक्ष्मणघाट क्षेत्रों में हुआ था जहां से बुद्ध के समय के कलात्मक पात्र मिले थे। माना जाता है कि यहां बौद्ध स्तूप था। यह बौद्ध स्तूप या विहार कभी भी राम जन्मभूमि पर नहीं रहा। अयोध्या के आसपास एक नहीं लगभग 20 बौद्ध विहार होने का उल्लेख मिलता है। ऐसा कहते हैं कि भगवान बुद्ध की प्रमुख उपासिका विशाखा ने बुद्ध के सानिध्य में अयोध्या में धम्म की दीक्षा ली थी। इसी के स्मृतिस्वरूप में विशाखा ने अयोध्या में मणि पर्वत के समीप बौद्ध विहार की स्थापना करवाई थी। यह भी कहते हैं कि बुद्ध के माहापरिनिर्वाण के बाद इसी विहार में बुद्ध के दांत रखे गए थे। वर्तमान में राजनीतिक नफरत के चलते यह भी दावा किया कहा जाता है कि यहां पर कौशल नरेश प्रसेनजित ने बौद्ध भिक्षु बावरी की याद में यहां बावरी बौद्ध विहार बनवाया था। इस विहार को पुष्यमित्र शुंग ने ध्वस्त कर दिया था। बाद में इस स्थान पर मस्जिद का निर्माण कराया गया। दरअसल, अयोध्या विवाद में तीसरे पक्ष की दावेदारी को मजबूत करके विवाद को और बढ़ाने के लिए की गई एक राजनीतिक खुराफात हो सकती है। दरअसल, यहां पर सातवीं शाताब्दी में चीनी यात्री हेनत्सांग आया था। उसके अनुसार यहां 20 बौद्ध मंदिर थे तथा 3000 भिक्षु रहते थे और यहां हिंदुओं का एक प्रमुख और भव्य मंदिर था। मललसेकर, डिक्शनरी ऑफ पालि प्रापर नेम्स, भाग 1, पृष्ठ 165 के अनुसार अयोध्यावासी हिंदू गौतम बुद्ध के बहुत बड़े प्रशंसक थे और उन्होंने उनके निवास के लिए वहां पर एक विहार का निर्माण भी करवाया था। संयुक्तनिकाय में उल्लेख आया है कि बुद्ध ने यहां की यात्रा दो बार की थी। इस सूक्त में भगवान बुद्ध को गंगा नदी के तट पर विहार करते हुए बताया गया है। इसी निकाय की अट्ठकथा में कहा गया है कि यहां के निवासियों ने गंगा के तट पर एक विहार बनवाकर किसी प्रमुख भिक्षु संघ को दान कर दिया था। वर्तमान अयोध्या गंगा नदी के तट पर स्थित नहीं है।

हिंदू और बौद्ध एक ही है इसके कई प्रमाण है?

दरअसल, बौद्धकाल में हिन्दू और बौद्धों के बीच आपसी समन्वय और सहअस्तित्व की भावना देखने को मिलती है। इस भावना के ही चलते जब कोई मंदिर बनाया जाता था तो उसमें हिन्दू और बौद्ध धर्म से जुड़े प्रतीकों को स्तंभों पर अंकित किया जाता था। आज भी दुनिया में ऐसे कई भगवान विष्णु और बुद्ध के ऐसे प्राचीन मंदिर है जहां पर दोनों की ही सम्मिलित मूर्ति मिल जाएगी। ऐसी कई गुफाएं हैं जहां हिंदू और बौद्ध धर्म के समन्वय को देखा जा सकता है। थाईलैंड, म्यांमार, इंडोनेशिया, मलेशिया आदि देशों में इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गुप्तकाल में भी एक ही राजा हिन्दू, जैन और बौद्धों के मंदिर बनाता था। जहां तक सवाल अयोध्या का है तो वहां न तो बुद्ध का जन्म हुआ, नहीं वहां उनको संबोधि घटित हुई और न ही उन्होंने वहां निर्वाण प्राप्त

किया। हां, उनके द्वारा वहां पर विहार जरूर किया गया। उस काल में इन नगर को साकेत कहा जाता था। गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से 563 साल पहले हुआ था। सिद्धार्थ गौतम बुद्ध ने गुरु विश्वामित्र के पास वेद, उपनिषद्? और योग की शिक्षा ली थी। छत्रिय शाक्य वंश में जन्में गौतम बुद्ध ने कभी भी खंडन-मंडन या नफरत के आधार पर अपने सिद्धांत या धर्म को खड़ा नहीं किया। उन्होंने पहली दफे बिखरे हुए धर्म को एक व्यवस्था दी और बिखरे हुए प्राचीन भारतीय ज्ञान को श्रेणीबद्ध किया था। इस बात को तभी समझा जा सकता है जबकि कोई व्यक्ति वेद, उपनिषद, स्मृतियां और त्रिपिटक का गहन अध्ययन करें। जो बौद्ध हैं उन्होंने वेद और उपनिषद, स्मृतियों का पूर्ण अध्ययन नहीं किया और जो हिंदू है उन्होंने कभी भी त्रिपिटक क्या है इसे समझा नहीं। यदि ऐसा होता तो दलित और ब्राह्मणों का झगड़ा ही समाप्त हो जाता। खैर..

जरी जरदोजी से मुस्लिम महिलाओं ने तैयार किए वस्त्र

अयोध्या जाएंगी दर्शन करने

अयोध्या के रामलला के लिए मुस्लिम महिलाएं बरेली की पहचान जरी जरदोजी से बने वस्त्र तैयार कर रही हैं। मेरा हक फाउंडेशन की अध्यक्ष फरहत नकवी की देखरेख में ये वस्त्र तैयार किए जा रहे हैं। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण में आस्था के साथ सौहार्द का भी पैगाम दिया जा रहा है। मेरा हक फाउंडेशन की अध्यक्ष फरहत नकवी के नेतृत्व में मुस्लिम महिलाओं ने रामलला के लिए अभियान चलाकर सहयोग राशि जुटा रही हैं। फरहत नकवी ने बताया कि हम लोग दोनों धर्मों के बीच सौहार्द का संदेश दे रहे हैं। पहले राम मंदिर के लिए राशि इकट्ठी करके उसे राम मंदिर ट्रस्ट को सौंपने का काम कर रही हैं वहीं दूसरा कार्य रामलला के वस्त्र तैयार की जा रही हैं। हमारे संगठन से जुड़ी तमाम महिलाएं इस कार्य में जुट गई है। मंदिर के लिए सहयोग राशि और रामलला के वस्त्र को लेकर हम अयोध्या जाएंगे।

मुस्लिम महिलाएं भगवान श्रीराम के दर्शन करेंगी- फरहत नकवी ने बताया कि हिन्दुस्तान में हर धर्म के लोग एक दूसरे से मिलकर रहते हैं। कांग्रेस, सपा, बसपा जैसे दलों ने इन धर्मों को बांटने का काम किया। मेरा हक फाउंडेशन से जुड़ी मुस्लिम महिलाएं रामनगरी अयोध्या में जाकर रामलला के दर्शन करेंगी। हमारा मकसद हिंदू-मुसलमान में आपसी भाईचारा बना रहे।

प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान 16 जनवरी से- प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान 16 जनवरी को कलश यात्रा व पंचांग पूजन के साथ होगा। 17 जनवरी को यजमान की ओर प्रायश्चित पूजन के साथ अन्य अनुष्ठानिक क्रियाएं होंगी। 18 जनवरी को श्रीरामजन्म भूमि में रामलला के प्रवेश के उपरांत 108 कलशों से उनका अभिषेक कर पूजन होगा जबकि 19 जनवरी से जलाधिवास अन्नाधिवास फलाधिवास व पुष्पाधिवास के हाथ हवन-पूजन भी चलता रहेगा। वहीं 22 जनवरी को मृगशिरा नक्षत्र में निर्धारित 84 सेकेंड के मुहूर्त में अपराह्न 12.29 बजे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भगवान का नेत्रोन्मिलन कर उन्हें दर्पण दर्शन कराएंगे और फिर उनकी महाआरती उतारेंगे।

कृपया आज के अंक को पढ़ने के उपरांत संकलित करके रखे, रद्दी करने से बचाए। चूंकि इसमें प्रभुश्री के चित्र एवं लेखन प्रकाशित किया गया है। - निवेदक : सभी भक्तगण